कृषि : पद्धतियाँ एवं प्रदेश

Agriculture : Systems and Regions

पृथ्वी के धरातल पर कृषि सबसे अधिक व्यापक आर्थिक क्रिया है। मानव ने स्थानीय रूप से भिन्न पर्यावरणीय दशाओं में कृषि व्यवस्था को अपनाया जो विभिन्न तकनीकों तथा विधियों द्वारा उत्पादित फसलों की विविधता तथा पशुपालन में परिलक्षित होती है। इसके अतिरिक्त, कृषि की उत्पत्ति विभिन्न स्थानों पर हुई है।

अनेक भूगोल वेत्ताओं ने विश्व की कृषि का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है। चिशोम (1889), हान (1892), स्मिथ (1913), फिन्च एवं बेकर (1917), सेपर (1924), एंजिलब्रेख्त, आदि विद्वानों ने विश्व को विभिन्न कृषि प्रदेशों में वर्गीकृत करने के लिए विभिन्न उपागमों का प्रयोग किया है। किन्तु सबसे महत्वपूर्ण वर्गीकरण डर्वेन्ट ह्विटलसी (1936) द्वारा प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने जोन्स वेलिंगटन के विचारों के आधार पर विश्व के कृषि प्रकारों का प्रारम्भिक ड्राफ्ट तथा मानचित्र तैयार किया बाद में नये साक्ष्यों के आधार पर मानचित्र में संशोधन किया गया।

ह्विटलसी का वर्गीकरण :- ह्विटलसी ने माना कि कृषि के वर्गीकरण में प्रादेशिक प्रतिरूपों का निर्धारण दो प्रकार के चर समूहों के द्वारा होता है - भौतिक एवं अभौतिक। भौतिक पर्यावरण शस्योत्पादन तथा पशुपालन की सीमाओं को निश्चित करता है। धरातल, जलवायु, मिट्टी एवं जलसंसाधन प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख तत्व हैं।

ह्विटलसी ने उपरोक्त आधार तत्वों के अनुसार विश्व को 13 कृषि प्रदेशों में वर्गीकृत किया है।-

शीब प्रदेशों की प्रमुख विशेषताएँ

(1) चलवासी पशुचारण :- चलवासी पशुचारण एक प्रकार की विस्तृत निर्वाहक कृषि है जिसमें प्राकृतिक चरागाहों में पालतु पशुओं को चराया जाता है। इसमें चलवासी पशुचारण अपने पशु झुण्डों सहित निरन्तर या मौसमी स्थानान्तरण करते हैं। यह कृषि शुष्क जलवायु से समायोजित है, जहाँ सघन निर्वाह कृषि कठिन या असम्भव होता है। अटलांटिक के तटों से सहारा मरूस्थल तथा मंगोलिया के स्टेपीज तक विस्तृत महान् शुष्क पेटी में विगत 3000 वर्षों से मरूस्थान कृषक तथा चलवासी पशुचारक निवास करते हैं। ~~चलवा~~

(2) स्थानान्तरी कृषि :- स्थानान्तरी कृषि - कृषि का प्राचीनतम स्वरूप है, जिसकी उत्पत्ति लगभग 7000-8000 वर्ष हुई थी जब मानव ने भोजन संग्रह के स्थान पर भोजन उत्पादन को अपनाना शुरू किया था। स्थानान्तरी कृषि उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वनों तथा मध्य अफ्रीका के झाड़ीदार वनस्पति के क्षेत्रों में प्रचलित कृषि का सबसे प्राचीन रूप है। यह कृषि आत्म निर्भर है जिसमें कृषक अपने परिवार के लायक ही भोजन उत्पादन करते हैं। जो भी अधिशेष उत्पादन होता है।

3. प्राचीन स्थानबद्ध कृषि :- विश्व के अनेक भागों में कृषीय समुदाय निर्वाहक खेती करते हैं। कृषक एवं उसके परिवार के पोषण के लिये फसलोत्पादन तथा पशुपालन को निर्वाहक कृषि कहा जाता है। यह उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ वाणिज्यिक फसलोत्पादन तथा पशुपालन के लिए पर्यावरण अयोग्य है। प्राचीन स्थान बद्ध कृषि की प्रणाली (पद्धति) तथा उसके उत्पादों की प्रकृति लगभग स्थानान्तरण शील कृषि जैसी है।

4. सघन निर्वाहन कृषि :- सघन निर्वाहन कृषि मानसून एशिया में प्रचलित है। इन प्रदेशों में सघन आबादी के कारण कृषि में सघनता की आवश्यकता है। सघनता का अर्थ यह है कि कृषक को एक भूमि के टुकड़े से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए अधिक प्रयत्न करना पड़ता है। निर्वाहक का अर्थ यह है कि फसलें स्थानीय उपभोग के लिये होती हैं।

5. चावल रहित सघन निर्वाहक कृषि - इन क्षेत्रों में कृषक शुष्कता सहने वाले खाद्यान्न उगाते हैं। इस प्रदेशों की अधिकांश विशेषताएं चावल प्रधान सघन कृषि जैसी हैं। उत्तरी चीन मंचूरिया कोरिया उत्तरी जापान, उत्तरी पश्चिमी भारत आदि के अधिकांश भागों में अनेक प्रकार की फसलें उगायी जाती हैं। इस प्रदेश में अकाल और बाढ़ों के कारण प्रायः फसलें नष्ट हो जाती हैं।

6. निर्वाहक शस्य एवं पशु पालन - इस प्रकार की कृषि में कृषक अपने उपभोग के लिये फसल उगाते तथा पशु पालते हैं। उन्हें प्रायः नकद आय प्राप्त नहीं होती अतः वे कृषि की आधुनिक मशीनरी तथा उत्तम नस्ल वाले पशु खरीदने में असमर्थ होते हैं। परिणामतः कृषि एवं पशुपालन से कम आर्थिक लाभ होती है।

7. भूमध्य सागरीय कृषि - भौगोलिक दृष्टि से भूमध्य सागरीय कृषि सबसे लोकप्रिय तथा विशिष्ट प्रकार की कृषि है। यह कृषि की प्राचीन पद्धति है जो प्रकृति और मानव के परस्पर सहयोग को दर्शाती है।

8. पशु पालन - पशुपालन का अभिप्राय विस्तृत क्षेत्र पर पशुओं के वाणिज्यिक चारण से है। यह अर्द्ध शुष्क तथा शुष्क प्रदेशों में अनुकूलित कृषि का एक प्रकार है। यहाँ वनस्पति विरल है तथा मिट्टियाँ कृषि के लिये अनुपयोगी है।

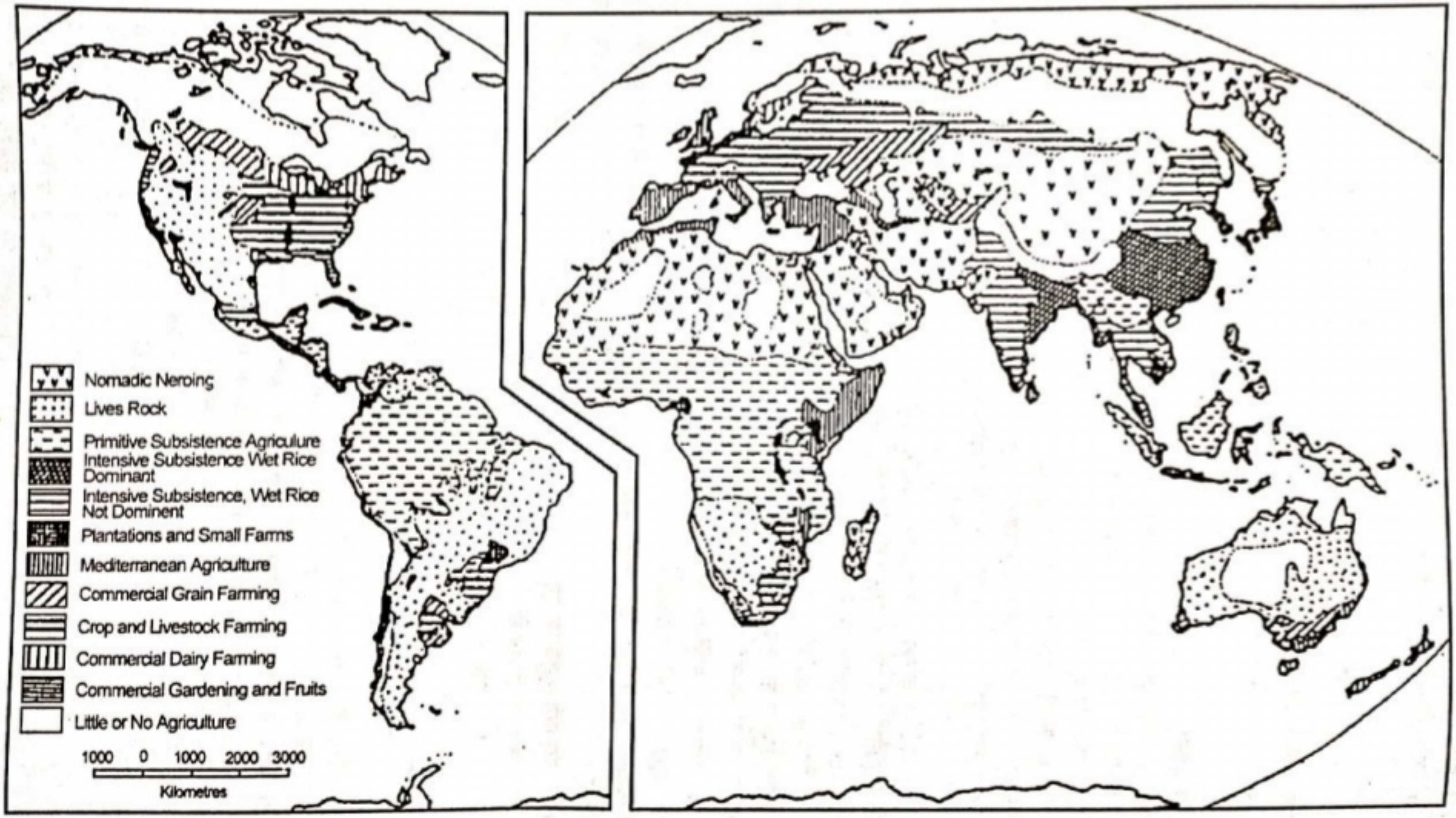

चित्र 14.1 : विश्व की प्रमुख कृषि पद्धतियाँ (प्रदेश) सह्विटलसी के अनुसार।

9. विस्तृत वाणिज्यिक अन्नोत्पादन :- वाणिज्यिक अन्नोपादन उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति द्वारा लाये गये आर्थिक एवं प्राविधिक परिवर्तनों की उपज है। उत्पादन प्राविधिकी की दृष्टि से यह विस्तृत तथा यन्त्रीकृत है। यह मध्य अक्षांशों के आन्तरिक भागों में विकसित है।

10. वाणिज्यिक पशुपालन एवं शस्योत्पादन (मिश्रित कृषि) :- मिश्रित कृषि उत्तरी पश्चिमी यूरोप की मध्य युगीन कृषि से विकसित हुई, जो निर्वाहक प्रकार की थी। अब यह वाणिज्यिक फसलों द्वारा पशुओं के विभिन्न अनुपातों तथा संयोगों में प्रचलित है।

11. वाणिज्यिक डेयरी फार्मिंग - वाणिज्यिक डेयरी फार्मिंग सबसे उन्नत तथा कुशल प्रकार की कृषि है। यह स्थायी चरागाहों के प्रयोग पर आधारित है तथा शीतोष्ण अक्षांशों में प्रचलित है। इसका उदय उत्तरी यूरोप में मध्य युग में हुआ था।

12. विशेषीकृत फलोत्पादन एवं सब्जी उत्पादन - बागों तथा रसोई-उद्यानों में फलों एवं सब्जियों का उत्पादन विश्व की आर्द्र शीतोष्ण कटिबन्धीय कृषि का एक सामान्य लक्षण है। पाश्चात्य संसार के मध्य अक्षांशों में भूमध्य सागरीय प्रदेशों में फलोत्पादन किया जाता है।

(13) सामूहिक कृषि - साइमन्स (1967) के अनुसार सामूहिक कृषि का अर्थ एक ऐसे जोत से है जिसका स्वामित्व अनेक व्यक्तियों के पास होता है और जिस पर समुदाय के सभी सदस्य मिलकर पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार कार्य करते हैं।

15. वाणिज्यिक बागाती कृषि - बागाती कृषि यूरोपीय लोगों द्वारा लेटिन अमेरिका, अफ्रीका तथा एशिया के उष्ण तथा उपोष्ण कटिबन्धों में प्रारम्भ की गयी। इस प्रणाली में पैमाने पर, पूँजीकृत तथा व्यापार के उद्देश्य से नकदी फसलों की खेती होती है। यह व्यापारोन्मुख कृषि प्रणाली का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। कपास, गन्ना, कहवा, चाय, रबड़ व तम्बाकू सबसे महत्त्वपूर्ण बागाती फसलें हैं।